निराशा की आत्मा क्या है, और यह हमें कैसे प्रभावित करती है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

निराशा की आत्मा एक आत्मिक अवस्था है जो किसी व्यक्ति को भीतर से घेर लेती है और उसे जीवन में आगे बढ़ने से रोकती है। यह व्यक्ति को आशाहीन, हताश और भावनात्मक रूप से जकड़ा हुआ महसूस कराती है यहाँ तक कि वह अच्छे कार्यों का पीछा करना, प्रार्थना करना या परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करना भी छोड़ देता है।

निराशा अक्सर लोगों को उत्तर पाने की प्रतीक्षा छोड़ने, प्रार्थना बंद करने या स्वयं पर और परमेश्वर की सामर्थ्य पर से विश्वास खोने तक पहुँचा देती है।

मसीही दृष्टिकोण में यह आत्मा अक्सर शैतान के प्रभाव से जुड़ी होती है। बाइबल स्पष्ट करती है कि परमेश्वर कभी हमारी जीवन में निराशा या हताशा नहीं लाता; वह आशा, शांति और प्रोत्साहन का परमेश्वर है।

वहीं शैतान इन उपहारों को हमसे छीनने की कोशिश करता है। प्रेरित पतरस चेतावनी देता है कि शत्रु गरजने वाले सिंह की तरह घूमता फिरता है कि किसे निगल जाए (1 पतरस 5:8).

बाइबल हमें निराशा का विरोध करने और प्रार्थना व विश्वास में दृढ़ बने रहने के लिए उत्साहित करती है।

निराशा की आत्मा क्या है, और यह हमें कैसे प्रभावित करती है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

लूका 18:1

“यीशु ने अपने चेलों से एक दृष्टान्त कहा कि उन्हें हर समय प्रार्थना करनी चाहिए और हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।”

यह पद दिखाता है कि यीशु हमें सिखाते हैं कि तुरंत परिणाम न दिखे तो भी कभी हताश न हों परमेश्वर हमेशा पीछे कार्य कर रहा है और उसका समय सिद्ध है।

मत्ती 7:7–8

“मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; खोजो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ,
तो तुम्हारे लिये द्वार खोला जाएगा। क्योंकि जो कोई मांगता
है, वह पाता है; और जो खोजता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा।”

यह आश्वासन देता है कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाएँ सुनता है और विश्वासयोग्य होकर उत्तर देता है। “मांगना”, “खोजना”, और “खटखटाना” निरंतर प्रार्थना की आवश्यकता को दर्शाते हैं — जो

निराशा की आत्मा क्या है, और यह हमें कैसे प्रभावित करती है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

निराशा पर विजय पाने का मुख्य मार्ग है।

लेकिन शत्रु हमारे मन में नकारात्मक विचार, दूसरों के हतोत्साहित करने वाले शब्द और झूठ डालकर हमारे हृदय में निराशा बोता है। यही कारण है कि व्यक्ति स्वयं को फँसा हुआ, जकड़ा हुआ या किसी भी दिशा को न देख पाने वाली स्थिति में पाता है।

निराशा की आत्मा पर विजय पाने के तीन उपाय

1. यीशु मसीह को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता स्वीकार करें

निराशा से मुक्ति का पहला कदम है कि यीशु मसीह को अपने जीवन में आमंत्रित करें। बिना मसीह के हम आत्मिक रूप से असुरक्षित रहते हैं और नकारात्मक शक्तियों जिनमें निराशा की आत्मा भी शामिल है के आक्रमण के लिए खुले रहते हैं।

यूहन्ना 10:10

“चोर तो चुराने, मार डालने और नष्ट करने ही आता है; परन्तु
मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं और बहुतायत से पाएं।”

निराशा की आत्मा क्या है, और यह हमें कैसे प्रभावित करती है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

यीशु हमें जीवन, शांति और भरपूरी देता है वे सभी बातें जिन्हें निराशा हमसे छीनने की कोशिश करती है।

2. परमेश्वर के वचन को पढ़ें और मनन करें

बाइबल प्रोत्साहनों और प्रतिज्ञाओं से भरी है जो हमें तब मजबूत करती हैं जब हम हार मानने की स्थिति में होते हैं। बाइबल हमें याद दिलाती है कि परमेश्वर हमारे सबसे अंधकारमय क्षणों में भी हमारे साथ है। चाहे बीमारी, आर्थिक संकट या टूटे हुए संबंधों के कारण निराशा आई हो — परमेश्वर का वचन नकारात्मक विचारों पर एक शक्तिशाली अस्त्र है।

भजन संहिता 34:18

“यहोवा टूटे मन वालों के समीप रहता है और खेदित आत्मा वालों
का उद्धार करता है।”

रोमियों 15:4

“जो कुछ पहले लिखा गया था वह हमारी शिक्षा के लिये लिखा गया,

निराशा की आत्मा क्या है, और यह हमें कैसे प्रभावित करती है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

ताकि हम धैर्य और पवित्र शास्त्र के शान्तिदायक वचनों से
आशा रखें।”

बाइबल हमें आशा और धैर्य देती है क्योंकि वह परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को बार-बार प्रमाणित करती है।

3. नियमित और निरंतर प्रार्थना करें

प्रार्थना निराशा के विरुद्ध एक अत्यावश्यक हथियार है। प्रार्थना के द्वारा हम परमेश्वर से जुड़ते हैं, अपनी चिंताओं को उसके सामने रखते हैं और उसकी शांति प्राप्त करते हैं। यीशु सिखाते हैं कि हमें किसी भी परिस्थिति में प्रार्थना करना नहीं छोड़ना चाहिए।

फिलिप्पियों 4:6–7

“किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर बात में तुम्हारी बिनतियाँ प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख प्रस्तुत की जाएँ। तब परमेश्वर की
शान्ति… तुम्हारे हृदयों और तुम्हारे विचारों की रक्षा करेगी।”

निराशा की आत्मा क्या है, और यह हमें कैसे प्रभावित करती है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

यह पद सिखाता है कि जब हम चिंता को प्रार्थना में बदल देते हैं, तब परमेश्वर की अलौकिक शांति हमारे मन की रक्षा करती है।

1 थिस्सलुनीकियों 5:17

“निरन्तर प्रार्थना करते रहो।”

निरंतर प्रार्थना हमें परमेश्वर की उपस्थिति से जुड़े रखती है विशेषकर निराशा के क्षणों में।

निष्कर्ष

यीशु को स्वीकार करके, बाइबल पढ़कर, और नियमित प्रार्थना करके हम निराशा की आत्मा से मुक्त हो सकते हैं।

परमेश्वर का वचन आशा से भरा है, और प्रार्थना वह साधन है जो हमें उसके साथ जोड़े रखती है। यीशु जीवन देने आए ऐसा जीवन जो निराशा को पराजित करता है।

यदि आप भारी महसूस कर रहे हैं, याद रखें:

निराशा की आत्मा क्या है, और यह हमें कैसे प्रभावित करती है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7

आप अकेले नहीं लड़ रहे। परमेश्वर आपके साथ है, और उसकी सामर्थ्य आपकी कमजोरी में सिद्ध होती है।

2 कुरिन्थियों 12:9

“मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है, क्योंकि मेरी शक्ति
निर्बलता में सिद्ध होती है।”

परमेश्वर की वह शांति और आशा आपको मिले जो केवल वही दे सकता है।

परमेश्वर आपको आशीष दे।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp